

'इतिहासहंता'क बहुचर्चित कवि रामलोचन ठाकुर कविताक अतिरिक्त अग्रदूत, कुमारेश काश्यप आदि नामे कथा, हास्य-व्यंग्य, निबन्धादि विभिन्न विधाक सुपरिचित हस्ताक्षर। मिथिला मैथिल, मैथिलिक प्रति हिन्दी साम्राज्यवादी सरकारक घृणित कोलोनियल दृष्टिकोणक प्रबल विरोधी—तें मैथिली आन्दोलन सँ सम्पृक्त, मैथिली मुक्तिमोर्चाक संयोजक। मैथिली रंगमंचक कुशल अभिनेता ओ निर्देशक 'अग्निपत्र', नाट्य विषयक पत्रिका 'रंगमंच' ओ हस्तलिखित पत्रिका 'शुल्फा'क सम्पादनक अतिरिक्त कएकटा पत्रिकाक बेनामीसम्पादक। अद्यावधि प्रकाशित पोथी—इतिहासहंता (कविता १९७७), बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य, १९८१), प्रतिध्वनि (अनु० कविता, १९८२), जादूगर (अनु० नाटक, १९८२), मैथिली लोक कथा(१९८३), आजुक कविता (स० १९८४), माटि पानिक गीत (१९८५) ओ देशक नाम छलै सोनचिरैया (कविता, १९८६)।

(1) देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
(2) स्मृतिक धोखरल रंग

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

राम लोचन ठाकुर

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

•

रामलोचन ठाकुर

•

अरुणोदय प्रकाशन, कलकत्ता

प्रकाशक—
अरुणोदय प्रकाशन
३३/५, डॉ० देवदार रहमान रोड,
कलकत्ता-७०००३३

मुद्रक—
पायनियर आर्ट प्रिन्टर्स
कलकत्ता-५

पहिल खेप—
शक्तिपूजा, १३९३ (१९८६)

मूल्य—
साधारण पाठकीय—पांच टाका
विशेष—पन्द्रह टाका

Desak Nam Chhalai Sonchiraiya
Maithili Poem (1986)
by RamLochan Thakur

समर्पण :—
मुक्ति युद्धक
विगत
आगत
ओ वर्तमान
अनाम योद्धा लोकनि कें
अपन असीम श्रद्धा
सम्पूर्ण आस्था
ओ
विश्वासक संग।
रामलोचन ठाकुर

१९७१ सं १९८४ धरिक
रचनाक संकलन थिक
ई पोथी
आशा
जे पाठक लोकनि
कविता पढ़बाकाल
एइ बात के
ध्यान मे रखताह।

आभार :—
पोथीक किछु रचना
शिखा
देसिल बयना
देशकोस
मैथिली अकादमी पत्रिका
बसात
मे प्रकाशित अई।
हम एइ सभ पत्रिकाक
आभारी छी।

क्रम

× × ×

मैथिली सं

हे मैथिली !
आर कते दिन
आर कते दिन कनैत - कल्पैत
मेल मरणासन्न
पड़ल रहब
बाल्मिकि आश्रम मे
अशोक बन सं बाल्मिकि आश्रम
की मानि लेब अपन नियति
विश्वास करू
पूब - पश्चिमक खिहाड़ि
नहि पार क पाओत
लछमन - रेखा
नहि आओत मिथिला देश
आ अहांक चारिकोटि लव - कुश
कुंभकर्णी निद्रा मे
सुतले रहता
अहां पर लगाओल गेल
मिथ्या आरोपक खंडन
नहि भ पाओत
आ अपन घर सं बैलाओल गेलि अहां
एहिना बौआइत रहब
रने - बने
नहि पावि सकब
अपन उचित सम्मान

आ कालक्रमे
मिथ्या आरोप
भ जायत सत्य
कारण अहांक चारिकोटि सन्तान जे
नपुंसक छथि
तें, हे सीते !
स्वयं उठू
आ
एक बेर फेर
बनि जाउ
काली-कराली-खप्परवाली
मचा दिअ प्रलय
एक बेर
मात्र एक बेर
आ
जं से नहि क पाबी
त हमर अनुरोध
खा लिअ बिख
किन्तु
विदेहक नाम कें
बदनाम जुनि करी
●

सुच्चा मैथिल
●

परम्पराक लीख ओ
नञि छोड़ताह
नञि कटओताह
आचार संहिताक बर्णित टीक
कोरा धोती कें
नञि सजओताह
कारण ओ छथि सुच्चा मैथिल
मिथिलाक सपुत—
आ हमरा
हंसी लगै-ए जे
मिथिला मैथिल वा मैथिली
अछिये कतय
आइ भारती
गुदड़ी सं भपने अपन अंग
दाबा पर चिपड़ी पथैत छथि
हीरामनि सुग्गा
पहिनहि मरि चुकल अइ
आ
तीन दिन सं अन्हार
तौनी सं बन्हने अप्पन पेट
बैसल छथि
एकजनियाँ एकचारी में
महा पंडित मंडन मिश्र
स्वतः प्रमाणम्
परतः प्रमाणम्
रटैत
जानि ने
कोन शंकराचार्यक
प्रतीक्षा छनि
●

पोस्टर कविता

चेतौनी

पास भेल अछि
कते ठाम सं
कइएकटा प्रस्ताव
ओतबे नञि
भेल'छि आन्दोलन आ अनशन
रक्तकधार बहओने अछिए
मिथिला केर सन्तान
किन्तु
जन्महिक बहीर
ई भारत सरकार
ने देलक ध्यान
पाबि ने सकली हमर मैथिली
अपन उचित सम्मान
कहू अहीं
ई राष्ट्र आब की धो-धो चाटब
आर एकर रक्षार्थ
माय केर गरदनि काटब
नहि कथमपि
बरू आगि लगौ
एइ राष्ट्र
बिलटि जाओ भारत
अन्हरा धृतराष्ट्र
आब न सहतै
मातृभूमि ओ भाषा केर अपमान

कूदि पड़त
क्रान्तिक ज्वाला मे
मिथिला केर सन्तान
कपा देत
धरती
पताल
असमान
तें
आबहुँ तों चेत
रे पटना के पंडा
रे डिल्लीक दलाल
हिन्दी के पोसा कुकूर
—शैतान
जुनि करबा
इतिहासक पुनरावृत्ति
सन्मुख ज्वालामुखी
बढ़ा जुनि डेग
सावधान
नहि त ई मिथिला देश
बनत विश्व कें
दोसर बंगला देश
दोसर वियतनाम

कहैत छला बाबा

कहैत छला बाबा
मूक होय वाचाल
नांघय पंगु पहाड़
जं चाहथि भगवान
सर्वशक्तिमान
अनाथक नाथ
श्री जगन्नाथ
परञ्च देखि रहल छी उनटे
आन्हर-बहीर
पैरालाइज्ड शरीर
बाटक कोटि भिखारि जकां
चरिपहिया काठक गाड़ी पर बैसा
डोरी लगा
घिसिया रहल-ए
एइ कात सं ओइ कात
एइ गली सं ओइ गली
नेनो-भुटका सभ
ढोल-झालि बजा
नचैत-गबैत, जेना
क रहल हो उद्घोष
अपन शक्तिक
कहैत छला बाबा
से छल गप्प
जे अइ प्रत्यक्ष—
से थिक सत्य

भूख

दू आखरक एकटा शब्द
—भूख
पेटक
वा
सेक्सक
इएह सभ किछु थिक
जीवन
जिज्ञासा
अनुभव
अभिलाषा
फूसि बात
जे
पिरथी घरै-ए
सूर्यक
चा
रू
का
त

हमरा कने बिलम्ब हएत

आ
एकरा एकटा संयोग
अथवा
विसंयोग—जे कोनो संज्ञा देल जाए
जे एहि सत्ताइस बर्खं सं
हमहूं बैसल वा बैसाओल
गेल धरि छी अबस्स
एहि दर्शक - दीर्घा मे

भाइ !
बड़ पैघ छइ ई नाटक
आ तहिना छइ दृश्यक बहुलता
उएह स्वाधीनता - संग्राम
उएह आजादी
उएह अमर शहीद
उएह हिन्दू - मुसलमान
उएह कश्मीर
ताशकन्द सं शिमला - शिखर - सम्मेलन
बुढ़िया फूसि
पड़ोसियाक संग दूसि
राशन पर भाषण
फालतू अनुशासन
अहिंसाक माला
गड़बर घोटाला

गरीबी हटाउ—
'ए' क विस्फोट
बोगस भोट
गान्धीबादक गर्भ सं
गणतांत्रिक समाजवादक उत्पत्ति
उएह रटल - रटाओल शब्द—
समाज विरोधी राष्ट्र विरोधी
टेरोरिष्ट, एक्स्ट्रिमिस्ट···
लोक भेल जब्द
विकट - विकट समस्या
सहज समाधान
मुशकिल आसान
चिन्नीक भाव नोन
निर्लज्जताक संग
मा - बाप, धिया - पुताक संग
दर्शन करैत रहू
छोट - पैघ लाल त्रिकोण···

किन्तु आब
दृश्य - परिवर्तन लेल
पर्दा नहि खसबए पड़ैत छइ
अन्हार कएनहि सं चलि जाइ छइ काज
आ चुप्पे
ककरो प्रवेश
ककरो प्रस्थान
दर्शक के बोर हएबा सं बचएबाक लेल
पेश कएल जाइ छइ
अनिवार्य रूपे

कोनो तानसेनक धुन पर
कोनो दरबारी कवि - विरचित
—स्तवन

ओना
एकरा कहल जाइ छइ—राष्ट्रगीत
आ दर्शक के बाध्य क देल जाइ छइ
उठि के ठाढ़ हएबा लेल
ओकर पएरक झुनझुनी
छुटि जाइ छइ
ओकर औंघी
टुटि जाइ छइ
आ फेर बैसि जाइए सभ
फ्रेस मिजाज सं
अग्रिम दृश्यावलोकनार्थ
किन्तु
चड़काहा कलाकार सभ
मेक - अप तर नुकओने अपन असली रूप
दुग्धफेनी बस्त्रतर सड़लाहा देह
टेप - रेकार्ड द्वारा प्रसारित डायलग
तर अपन तोतराह बोल
अभिनयक नाम पर
हिजरा जकां चमकबैत
अपन हाथ - पएर, आँखि - मुँह
आ
लाल - पीयर - हरियर भक-इजोत
नहि जमा पबैछ
कनिओ प्रभाव

भाइ !
सुनैत छी

आनो ठाम होइ छइ नाटक
मुक्त आकाश तर
विशाल पिरथीक बक्षपर पसरल
हरियर-हरियर दूभि पर
दर्शक आ अभिनेता में नहि होइ छइ
कोनो पार्थक्य
आ दर्शक दिर्घाए सं
जाइछ कलाकार
नहि होइ छइ कोनो
मेक-अप
ड्रेस

आ ओ सभ
अपनहि मुँह सं बजैछ
कहाँ होइ छइ प्रयोजन कोनो
तानसेन
वा बाइजीक

सरिपहुँ
ओ नाटक कत्तेक सुन्नर होइत हेतैं
किन्तु
ताइ हेतु अनिवार्य
एइ नाटक टाटकक समाप्ति
एइ मंचक विनाश
आ दर्शक फेर औंघा रहलए

तें हे हमर अग्रज
अहाँ अगुआउ
जुनि करी प्रतीक्षा हमर
हमरा कने विलम्ब हयत

भाइ ! अहाँ घुरि जाउ

●

आ
आपन अग्रजक अस्थि सं
जकर सीमा कें बेढ़ने
रही अहाँ, अपन सहयोगी
शहीदक शारा पर
रोपने रही तुलसी
गुलाब, रजनीगन्धाक गाछ
सींचने रही अपन शोणित सं
से रहल कहाँ
जाइ माली के क गेल रही
नियुक्त—एकर रक्षार्थ
—कहिया ने उखाड़ि फेकलक
आ
तुलसीक जगह तुतमलंगा
गुलाबक जगह कोनो बनैया—बेल
रजनीगंधाक जगह कोनो बनकटैया ''क
गाछ रोपि देने अइ
भाइ !
ओ जे फुल अहाँ देखैं छिऐ ने
से सरिपहुँ थिक कागतक
आ लाल टुह-टुह
पुष्ट, पैघ-पैघ फल
कोनो सिनुरिया आम वा
दाड़िम नञि थिक

आ त महकारी फल थिक
भाइ !
एकरो सींचल गेल छइ
अहींक अनुजक शोणित सं
जे केने छल विरोध
अहाँक रोपल गाछ कें
उखाड़बाक
आ तें
घोषित कएल गेल छल
—विद्रोही
ओना सत्ताइस वर्खक बादो
मुख्य दुआरिपर
अहाँक लगाओल ओ
—नामपट
ओहिना झुलि रहल छइ
सभ किछु ओहिना छइ
किन्तु ओ सभ किछु नञि छइ
अहांक स्वप्नक स्वर्णिम बाग
ई नञि थिक
किन्हुँ नञि थिक
भाइ ! अहाँ घुरि जाउ

●

आगामी काल्हि हमरे सभक हएत

●

आ
तोहर निर्मम हत्या के हम
एखनो नञि बिसरि पओने छी
भाई !
हत्याराक दानवी देह
औखन नाचि रहल-ए
हमरा आंखिक सोझा
हमरा दुख अइ
असीम दुख
जे
तोहर चिताक आगि
नञि संयोगि पाओल
किन्तु
हमरा लोकनि
पजारने रही जे घूर
से पझायल अइ कहाँ
हम त ओकरा
मात्र झांपिटा आयल छी
जे प्रातः काल
समस्त कोबर करती
बदलि जेतैक
धुम्हुर मे
जकर एक-एक कण मे रहतेक
बारूदक शक्ति

घघरा कहाँ क पाओत ओ काज
आ
एइ रातिक गुम्ज अन्हार मे
हमरा सभ के
तय क लेबाक अइ
बहुत रास बाट
पहुँचि जेबाक अइ
ओइ दिबड़ा भीड़ पर
जतय स
काल्हिक बाल सुरुजक संग
देबाक अइ नारा
बढ़ेबाक अइ डेग
आजुक बुढ़बा सूर्य
मरि चुकल अइ
ई अन्हार रहौक अनके लेल
किन्तु आगामी काल्हि
हमरा सभक हएत
हमरे सभक हएत

●

मन्त्र कविता

दोहाइ ओइपारक छो

जय सतइत्तरि
तोहर सेवा के के केलकौ
इनिरा, जय परकाश केलकौ
जगजीवन, देशाइ केलकौ
चनशेखर सं चरण सिंहधरि
श्लोक पढ़लकौ
ढोल-झालि-मिरदंग बजलकौ
बतर्ज भारतनाट्यम्
स्वामी नाचि-नाचि क
चओर डोलेलकौ
शुरू रेल सं
शेष जेल धरि
जाजक धुनि पर
नाचि-नाचि क
जार्ज महोदय आरती केलकौ
बलिप्रदान निमू जनता केर
पुलिस-रूप जल्लाद चढ़ेलकौ
खुब नहेलकौ रक्त-धार मे
भय प्रसन्न तों
हन्ड्रेड परसेन्ट
वरंब्रूहि कहि थुथुन हिलओलें
खुब बिलइलें
आसेर, पाभरि
यथायोग्य वर
पथिया—पथिये
ककरो

पी० एम० के चेयर
त ककरो होम
इन्डस्ट्री ककरो
केओ डिफेन्स ल सेन्स गमओलक
केओ दधीचि-पद पबितहि
दौड़ल अमेरिका
अपरेशन करबए
दबकल रहलि मात्र इनिराटा
जे अरियाति कें छलौ अनने
आ जनता ?
जन ता बाद पड़ल
जनता नढ़िया सं बाघ बनल
अछि गरजि रहल
डिल्ली, पटना
आ गाम - गाम
अछि तरसि रहल
भुखल - प्यासल
निमू जनता
जहिना छल तहिना
बनल रहल
रौदी - दाही भुखमरी
अशिक्षा बेकारी केर
गुज्ज अन्हार मे भटकि रहल
बाजार भाव
असमान चढ़ल
सरिसोक तेल
चलि गेल स्वर्ग

नूनो बिकाइत अछि
टके सेर
नेता कहैछ
फिरि आएल देश मे
प्रजातंत्र
आ बनल पमरिया के तेसर
अखबार, रेडियो
हांजी, भलेजी भले
गाबि रहल
जनता अबोध की जानि पाओत
ई प्रजातंत्र केर तंत्रेटा थिक
मूल, महाषड्यंत्र केर
तैयो
भितरे - भितर
अछि चिनगी सुनगि रहल
सुच्चा क्रान्तिक
तें, दोहाइ
दोहाइ हे सनअठत्तरि साल
दोहाइ अजन्मा संग्रामी नेता
दोहाइ जनता जनार्दन
सर्वहारा समुदाय
एक खेप दइक कसि कें टाहि
जोंक आ उड़ीसक विरुद्ध
मुक्ति संग्रामक
दोहाइ
दोहाइ ओइपारक छी

●

ओहू दिन एहिना भेल रहै

●

ओहू दिन
एहिना भेल रहै
जादुगरक हाथक लाठी चमकल रहै
आ लोक मे
हुर्र मचि गेल रहै

लोक
भेंड़ियाधसान लोक
युग - युग सं देखैत आयल - ए
जादूक खेल
आ मुग्ध भ
बजबैत रहल - ए थपड़ी
करैत रहल - ए वाह - वाह

लोक
भेंड़ियाधसान लोक
अपन स्मृतिक कमजोरीक कारणे
प्रत्येक खेल के
बुझि लै - ए नव
अभूत पूर्व
जखन कि
एकेटा खेल
बेर - बेर दोहराओल जाइत रहलै - ए
कहियो
शुरू सं शेष

त कहियो
शेष सं शुरू
कहियो किछु जोड़ि क
त कहियो किछु घटा क
आ
एहि समस्त खेलक केन्द्र मे
रहलै - ए एकटा छँड़ी

—जादुक छँड़ी

लोक
मेंड़ियाधसान लोक
नञि बुझि पबै-ए
जे ई समस्त खेल
ओही छंड़ीक चारूकत
चकभाउर दैत छइ
जकरा हाथ मे
छंड़ी रहैत छइ
ओ सर्वगुण सम्पन्न
सर्व शक्तिमान
सर्वज्ञ बनि जाइए

लोक
मेंड़ियाधसान लोक
नञि बुझि पबै-ए
जे एहि खेल मे
वादी प्रतिवादीक लड़ाइ
जे कि छंड़ीक खेल होइ छइ
लोक देखैआ छइ
एहि मे

केओ मरै नञि छइ
मरैक बहन्नाटा करै छइ
ओना
छंड़ी त बेधरक चलै छइ
परञ्च प्रतिवादी पर नञि
दर्शकेक कप्पार पर पड़ै छइ
दर्शके मरै-ए
आ फेर दर्शक मे
मचि जाइ छइ हूर
पड़ाइत लोक
पिचाइ-ए, मरै-ए
मुदा
लोक
मेंड़ियाधसान लोक
से नञि बुझि पबै-ए
ओ नञि जनै-ए
जे दुनू जादुगर
वास्तव मे अइ कठपुतरी
जकर डोरी छइ
कतौ आनठाम
जकरा इशारा पर
होइ छइ समस्त खेल
(ओना
ई तकनीक
कने नवधरि अबस्से छइ)

लोक
मेंड़ियाधसान लोक
प्रत्येक खेल मे ढङरि जाइ-ए
वाह - वाह करै-ए
थपड़ी बजबै-ए
हुर्र मे पड़ाइ-ए
पिचाइए
मरै - ए

●

बिहाड़िक बाद आमक गाछो

●

एहखन जेना समाप्त भेल हो युद्ध
चहुदिस वातावरण
छैक निस्तब्ध
भीतु आर संत्रस्त
मुर्दघटी सन शान्त
भयाबह दृश्य
मातृभूमि केर प्रहरी केर लहास
अंग - भंग छिड़िआयल
भरल मैदान
स्पन्दन हीन
प्रकाश हीन
निष्प्राण
छह प्रत्यक्ष गबाह
छलै ओ युद्ध
केहन भयाबह
केहन शत्रु - दल शौर्य
लूटल देल उजाड़ि
प्रकृति सौन्दर्य
भू - सन्तान
अतर्कित पाओल गेल
डटल
लड़ल
आ मरल
न देखल पाछु

पाओल बीरगति
भरल अधर मुस्कान
देखि
बिनाशक बीच
आश - आलोक
बुन्द - बुन्द देल
शोणित
स्वेद
चुआय
सींचल मा केर कोर
निश्चित जनमत
सुन्दर
स्वस्थ्य
भविष्य
सुन्दर सं
सुन्दरतम होयत काल्हि
किन्हु पुनि
ककरो
नञि गलतें दालि
पुनः
शान्ति श्री
अपन ओछाओत
सेज
गाओत
लोड़ी
सुन्दर
सोहर गीत

●

चारण हम ओकरहि छी

●

एक सही कविता
पहले
एक सार्थक वक्तव्य होती है।
—धूमिल

जे नञि छइ
ताइ में अविश्वास
जं नास्तिकता थिक
त सरिपहुँ हम नास्तिक छी
वास्तव में आस्तिक छी
परजीवी पाथरक नञि
श्रमजीवी ओइ जीवंत
प्रतिमाक पूजक छी
जे मात्र लेब, नञि
देब'टा जनै—ए
स्रष्टा ओ सिरजै—ए
सभ्यताक बाट नव
पोषक ओ विश्व केर
पोषण करै—ए
गढ़ै—ए नव इतिहास
नव विश्व केर
चारण हम ओकरहि छी

●

कैफियत

•

अहांक
एलसिशियन सं
बचबाक हेतु हमरा
धारण करय पड़ैछ
मुखओटा, कहियोकाल
असामान्य नञि
सामान्य बनबाक हेतु
पोशाकक संगहि
चेहरो बदलय पड़ैछ
किन्तु
श्रीमान्
की फर्क पड़ैत छइ
आगि
समुद्रक गर्भहि में किएक ने हो
बारवानल सृष्टि करबाक
क्षमता त
रखिते अइ।

•

ओ हमर भाइ छल

•

ओ
हमर भाइ छल
काल्हि
जकरा फांसी देल गेलै।

अपराध ?

जनताक स्वयंभू सेबक
देशक भाग्य नियंताक अनुसार
ओ देशद्रोही छल।

कारण ?
पैघ शिक्षा
आ डिगरीक अछैतो
ओ
देशक बहुलांश युवक जकाँ
इमप्लायमेंठ कार्यालय में
लाइन नहि लगओलक
चाकरीक निमित्त
शेठ-साहुकारक
दुआरि नहि खट-खटओलक
नेता सभके
तेल नहि लगओलक।

ओ चल गेल
निछच्छ देहातक एगो
बोनिहार-बस्ती मे

ओकरे सभक संग
रहैत छल
खटैत छल
खाइत छल
आ
पल्लवतिक समय
ओकरा सभ के
सिखबैत छलै
अ
आ
क
ख

ओ
हमर भाइ छल
काल्हि
जकरा फांसी देल गेलै।

आर कहियाधरि

आर कहियाधरि
आर कहियाधरि होइत रहत
शील हरण
उतथ्य पतनी ममताक
देवगुरु बृहस्पति द्वारा
(बाधा कि द पोओत
शिशु गर्भस्थ)
आर कहियाधरि
आर कहियाधरि जनमैत रहत
अभिशापित
आन्हर भविष्य

मृत्यु अभिमन्युक

शत्रु निर्मित
सात-सातटा चक्रव्यूह तोड़ि
अपराजेय अभिमन्यु
जखन आपस अबैछ
त आलिंगन लेल बढ़ल
हजार-हजार स्वजनक हाथ
ओकरा आबद्ध क लैत छैक
आ तैखन
पड़ैत छैक ओकरा पीठपर
सबधानल
एक नहि
अनेकों छूरा
ओ आर्तनाद त नहि करैछ
उनटि क तकैतटा अछि
आ खसि पड़ैछ

ओना
महाभारतक ओ कथा
सुन्दरे नहि
आकर्षको अबस्से छैक
जे
सातम द्वार भेदन कला सं
अनभिज्ञ
सप्तमहारथी सं घेरेल
असगर अभिमन्यु
मृत्यु के प्राप्त भेल छल
आ सत्ते
एहीठाम होइत छैक
मृत्यु अभिमन्युक
●

अजगुत देश

ई आकाशवाणी थिक
विचित्र सम्बाद पढ़ि रहल छी
आचार्य अनटोटल
हेमनिए मे
भारतीय-भू-सर्वेक्षण विभाग कें
एकटा नव देशक पता लगलैए
जे
तीन कात नदी
आ एक कात पहाड़ सँ घेरल अइ
नामकरण कएल गेलैए
अजगुत देश
ओना
किछु भू-तात्विक लोकनिक मतें
ई देश नव नहि
बड़ पुरान थिक
इतिहास सँ पुराण धरि
जनक
याज्ञवल्क्य
गौतम
कपिल
कणाद……क
जन्मस्थान
मिथिला
तिरहुति वा
बिदेह भूमिक चर्च
एकर ज्वलंत प्रमाण थिक

मुद्रा
भू-सर्वेक्षण विभाग
एकरा नहि मानैछ
ओकर कहब छै जे
पुराण कथित
मिथिला देश मे
जनमल छलाह
शिव सिंह
अपन
भू-भाषा-संस्कृतिक रक्षार्थ
कएने छलाह संघर्ष—आजीवन
एक नहि
सतरह खेप
मेल छल पराजित
दिल्ली सुल्तान
तेहने होइत अछि
मिथिलाक सन्तान
परञ्च
एहि अजगुत देशक
मनुक्खक आकृति आ
पशुक प्रवृति बला जीव
ने त माउग अछि
ने पुरुष
तें ई देश
आनजे कोनो देश किएक न हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ

किन्नहुँ नहि भ सकैछ
ओकर कहब छैक जे
पुराण कथित
मिथिला देश मे
जनमल छलाह
कविपति विद्यापति
घोषित कएने छलाह
बालचन्द विज्जावइ भाषा
गओने छलाह
परम प्रिय
पावन
तिरहुत देश
परञ्च
आजुक
पमरियाक तेसर सन
हाँजी-हाँजी करैत
नाचि-नाचि
जनगन-मन गबैत
कविनामधारी जन्तुक ई देश
आर जे कोनो देश किएक ने हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ
किन्नहुँ नहि भ सकैछ
ओकर कहब छैक जे
पुराण कथित
मिथिला देश में
जनमल छलीह

जगजननी जानकी

धरती पुत्री

सीता

जनिका
अपमानित कय
कटओने छल
अपन
नाक
कान
लंकापति रावणक बहिन
सुपनेखा

परञ्च
आजुक
सुपनेखाक तरवा चटैत
माँ मैथिली कें
नाक
कान
काटि
घर सँ
बैला दैनिहार
सन्तानक ई देश

आर जे कोनो देश किएक ने हो
मिथिला देश नहि भ सकैछ
विदेहुँ नहि भ सकैछ

ओना
अनुसन्धान चलि रहल छइ

देश-विदेश सँ
भू-तात्विक
नृतात्विक
सभ आबि रहल छथि
बात
आगू बढ़ी रहल छइ
तें
विचित्र सम्वाद
आजुक लेल
एही ठाम
शेष भेल
●

एहि संएतीस बर्ख मे

आ
ओकर पयर थकमका जाइ छइ
हाथक टुनटनाइत घन्टी
चुप भ जाइ छइ
कातक
कोनो दोकान सं अबैत
रेडियोक आवाज
राष्ट्रपतिक भाषण
राष्ट्रक नाम
प्रगतिक लेखा-जोखा
आजादीक
संएतीसम वर्षगांठ पर
'संएतीस बर्ख !
ओ निसास छोड़ैए
आइ सं
ठीक संएतीस बर्ख पहिने
ओ कलकत्ता आयल छल
ओहिना मन छइ
सिनेमाक रील जकाँ
समस्त घटना
जेना आँखिक सोझा
नचैत होइ
एक दिन
निसाभाग राति मे
जखन कि सगरो गाम निसब्द छलै

हुम-हुम करैत
झुमि गेल छलै
गोर चलिसेक पुलिस
घेरि लेने छलै
चारूकात सं ओकर घर
घरक फट्टक तोड़ि देने छलै
आ
ओकर बाप के
पकड़ि क ल गेल छलै
ओना ई गप्प
ओकरा बाद मे पता लगलै
जे ओकर बाप
सोराजी दल में छलै
आ ओकरे गामक जमींदार
सतलरेन बाबू
ओकरा पकरबओने छलै
जे
पुलिसक संगहि छलै
से त
ओ अपने आँखिए
देखने छलै
तकर
मास छ-एक बाद
एक दिन ओ सुनलक
'देश अजाद भ गेलै
सोराजी दल जीति गेलै'
आ
तहिया ओकरो मन

खुसी सं नाचि उठल छल
लोक सभ कहै जे
आब ओकरो बाप कें
जहल सं छोड़ि देतै
ओहो
घुरि गाम एतै

मुदा
दिन पर दिन
मास पर मास
बर्ख पर बर्ख बीति गेलै
ओकर बाप
घुरि क नहि एलै

आ
सतलरेन बाबू
ताही बेर
डिल्ली गेलै
लोक सभ कहै
मिनिस्टर बनि गेलै

आ
ताही साल
अगहनी मे
ओकर माम
गाम गेल छलै
घुरती काल अपने संग
एकरो कलकत्ता लेने एलै
'सरौ,
ई रिक्सा स्टैण्ड बनालेलन'....'

आ
तराक द ओकरा छाबा पर
डंटा पड़ैत छइ
ओ छिलमिला जाइए
ठाङ पर नजरि पड़ैत छइ
कत्ते क पातर भ गेलैए
एहि संएतीस बर्ख मे
एहि संएसीत बर्ख मे—ओकर हाड़ कतेक
जगजियार भेलैए
एहि संएतीस दर्ख मे
एहि संएसीत बर्ख मे—ओकर डांड़ कत्ते क झुकलैए
एहि संएतीस बर्ख मे—
एहि संएतीस बर्ख मे—पुलिसक लाठी कत्तेक
सबधानल भेलैए
एहि संएतसीस बर्ख मे—
एहि संएतीस बर्ख मे—ओकर गारि कत्तेक घिनाओन भेलैए
एहि संएतीस बर्ख मे—
आ
ओकर पएर
अपनहि बढ़ि जाइ छइ
घन्टी—
टुनटुनाय लगै छइ
'एन्ने कहाँ ?
इधर चलऽ'
आ
पुलिसक धक्का सँ
ओ खसैत-खसैत बंचैए

सामने थाना छइ
जहिया
ओ कलकत्ता आयल छल
ई थाना नहि छलै
ओ अपन गामक
असगरे छल
एखन
गोर चालीसेक हेतै
केओ ठेला ठेलै छइ
केओ भाका उघै छइ
ओ गाम गेल छल
सगरो दुसधटोली भम्ह पड़ै छलै
एकोगो पुरुख-पातक पता नहि
जेना ओइ बेर भेल छलै
जखन कि
ओकरा बाप कें
पकड़ि क ल गेल छलै
सगरो दुसधटोली
पड़ाइ लगि गेल छलै
ओना
एहि बेर लोक
डरें गाम छोड़ि
पड़ाएल नहि छलै
पेटक खातिर
पड़ाएल छलै
डिल्ली
पंजाब

ओ सोचैए
एहि संएतीस बर्ख मे
कत्तेक टोल
कत्तेक गाम
खाली भेल हेतै
एहि संएतीस बर्ख मे
एहि संएतीस बर्ख मे कत्तेक जुआन-जहान
अपन लोक-बेद
गाम-घर
तेजने हेतै
एहि संएतीस बर्ख मे
एहि संएतिस बर्ख मे रोटी कत्तेक महग भेलैए
एहि संएतीस बर्ख मे
एहि संएतीस बर्ख मे मजूरी कत्तेक सस्त भेलैए
एहि संएतीस बर्ख मे
एहि संएतीस बर्ख मे थानाक संख्या कत्तेक बढ़लैए
एहि संएतीस बर्ख मे····
'साला निकाल पांच ठो रुपैया'
'पांचगो कहां स आयगा हुजूर
आइ भोर स त
दुइएगो कमाया हाय····
हमरा लाइसेन्सो हाय···
'लाइसेन्स का बच्चा···'
आ
एगो जबर्दस्त थापर
ओकरा कनपट्टी मे लगै छइ
ओ चकभाउर द
खसि पड़ैए

आँखिक आगू
अन्हार भ जाइ छइ
ओकर डांड़ मे खोंसल बटुआ
पुलिसक हाथ मे झुलै छइ
ओकर पसेनाक कमाइ
दू गो टाका
पुलिसक हाथ मे उड़िआइ छइ
पुलिस बिहुँसैए

कातक
कोनो दोकान सं
रेडियोक आवाज अबै छइ
राष्ट्रपतिक भाषण
राष्ट्रक नाम
प्रगतिक लेखा जोखा
आजादीक
संएतीसम बर्षगांठ पर
रिक्सा वाला
एखनो बेहोश पड़ल अइ
ओकरा चारूकात
अन्हार छइ
गुज अन्हार

●

आ
कोनो नरभक्षीक चांगुर सं पड़ाएल
कपिला गाय सन कपैत
आश्रय तकैत ओ माउग
एकटा पिशाचक हाथ पड़ि गेल
जे ओकरा
हाथ पएर बान्हि
महानगरक चौबटिया पर
क देलकै बेनग्न
धरती पर चित्ते पारि
सगरो देह पोति देलकै
विभिन्न रंग सं
आ चिकरि क बाजल
भाइ सभ !
कने बिलमि जाउ
एहन अवसर जिनगी मे
अबैत छइ कहियो काल
अवस्से देखने जाउ
ई कोनो जादू - टोना नञि
हाथक कमाल छइ
सरिपहुं बेमिसाल छइ
एकदम सं टटका
स्वदेशी कला
एकता मे अनेकता'''आइ यम सौड़ी

अनेकता मे एकताक
        जीवन्त छवि
एहि सं नीक दोसर
        की भ पाओत भला
                आकि नञि

त भाइ सभ !
कने जोर सं थपड़ी बजाउ
आ दू - दू डेग
पाछू भ जाउ···

आ भीड़
जकरा मात्र कानटा होइ छइ
वाह - वाह करए लागल
थपड़ी पीटए लागल···

ओना
ई बात दिगर भेलै
जे ओ असहाय माउग
पहिनहि—बहुत पहिनहि
मरि गेल छलै

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन
गुरु-गंगाक आशिर्वादें
भेटल छलनि राज-पाट
मुदा पूर्व जन्मक
        तपस्याक छलनि चूक
        आंखि देखि नहि पओलनि पुत
        जे दितनि मुंह में उक
भेबो केलनि त
        एगो बेटी
        ओलक टोटी
नान्हिञे टा सँ बहसलि बंहबाड़ि
मुँहपर त नहि
मुदा परोक्ष में त सब बजबे करै
        'छौंड़ी हेतै बड़ छिनाड़ि'
बापो के कि सोहाइन
फुटली आंखि
        'बीत भरिक छौंड़ी कें
        केना जनमि गेलै पांखि'
ओना लोक त इहो बजै
        'बेटी त बापेक ने छइ'
आ
बाप बेटीक छिच्छा देखि
मनहि-मन होथि झुर-झुमान

चिर-रोगाहि महारानी
रूपमती कमलावती
जखन नहि भेलनि सहि
त मूनि लेलनि आँखि
तेजि देलनि परान

राजा रत्नसेन
बहुतो दिन धरि केलनि एकछत्र राज
कमेला नाम-यश
मुदा विधिक विधान
लिखलाहाक आगु चलितें छइ
ककर बश
एक दिन हठात् बाजि गेला टन
अकाल मृत्यु भेलनि
ब्रह्महत्याक पाप
माथपर सवार छलनि
फल जेहन हेबाक चाही
तेहने भेलनि

राजा रत्नसेन मरि गेला
देश भरि मे
शोक-पालनक आदेश भेल
राजावाली बात छलै
देश-देशान्तर सँ
राजा-महाराजा एला
जवारी नोतल गेल
भोज भेल, भात भेल
माछ-माउसक परात

भेल राज्याभिशेक
बेटाक अभाव मे बेटी
राजकुमारी भुवनमोहिनी
सिंहासनक रखलनि टेक

ओना
बहुतो शेठ-सामन्त लोकनि
केलनि विरोध
'मौगी करतै राजा हो
देशक अपमान थिक'
मुदा राजकुमारी भुवनमोहिनी कें
रूप छलनि, गुण छलनि
देखल छलनि बाट-घाट
घूरल छलनि देश-विदेश
बापेक सङ्ग
पीने छली कतेको घाटक पानि
बापे सँ सिखने छली
वशीकरण मंत्र
शेठ सामन्त लोकनि मे फुट-भेल
देखि-सुनि रूप-गुण
राजकुमारी भुवनमोहिनी
किछु के पटिया लेलनि
अपना मे मिला लेलनि
जतबा दिन रूप छलै, गुण छलै
भोग कएल
सुगा बना क राखि लेल तकरावाद
बहुतो के भोग देल
भगवतीक बीचेबाट

राजकुमारी छली बुद्धिमती
शत्रु सँ मुक्ति पाओल
राजकुमारी छली सती
लोक सभ सुयश गाओल

राजकुमारीक लिप्सा बढ़ैत गेल
भोगक लिप्सा
धनक लिप्सा
नामक लिप्सा
राजकुमारी घुरय लगली देश-विदेश
नव-नव शेठ सामन्त
राजा-राजकुमारक होइत रहल
समावेश
राजकुमारी कहलनि—
हमरा कोइलीक कानब नहि सोहाइए
ताइ सं कौआ थिक नीक
कार कौआ'
अमला सभ ढोलहो दिया देलक—
देश में एकोगो कोइली नहि रह-ए
कौआक संख्या बढ़ाओल जाय
कार कौआक'
राजकुमारी कहलनि—
बात कम
काज बेसी हेबाक चाही
देशक परजा के
गदहा सं शिक्षा लेबाक चाही
राजकुमारी कहलनि—
हमरा मनुक्ख सं बेसी

पसिन्न अइ कुकूर
एलशिसियन कुकूर'
दरबारी सभ
कुकूर जकां भों भों कर-ए लागल
रमलिल्लाक हनुमान जकां
नकली नाङड़ि डोलब-ए लागल
राजकुमारी कहलनि—
देशक प्रगति
प्रगति हित शान्ति
शान्ति हित शक्ति
सम्पूर्ण शक्ति हमरा हाथ मे चाही
हम शक्तिक उपासना करब
मसान साधना करब
हमरा आसव चाही
चाही नर-मुंड
हमरा महामांस चाही.........
देश मे
जल्लाद सभक
चहल - पहल बढ़ि गेलै
मसानी शान्ति पसरि गेलै
राजकुमारीक बापक बालसंगी
मओनी बाबाक मओन भंग भेल
घोषणा केलनि—
हमरा महाभारतो पढ़ल अइ
अनुशासन - पर्व ....

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
सोन सभ

राजकुमारीक खजाना मे बन्न भेल
देश मे बहैत छल दूधक नदी
दुध सभ
सुखा गेल
राता-राती बिला गेल
देश मे बह-ए लागल
शोणितक नदी
लोक मे आतंक पसरि गेल
लोक सभ जनैत छल
अपना मे बजैत छल
राजकुमारी छथि डंकलि डाइन
डंकै छथि गाछ
नङटे नचैत छथि
पोसने छथि गाहीक गाही
भूत प्रेत जिन्न मनुखदेवा'
लोक सभ जनैत छल
अपना मे बजैत छल
मुदा बाहर सभ
चौक भेल रहैत छल
डरे कपैत छल

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन
रानी रूपमती कमलावती
राजकुमारी भुवनमोहिनी
राजकुमारी के दुगो बेटो छलनि
पहिल त बड़ बेश

शितलाक बाहने बुझ
ताल लागल दोसराक बेर
नम्र आसमर्द भेल
'राम - राम ई की भेल
राजकुमारीक कोखि सँ...
पाप कतौ झाँपल गेल.... ...'
मुदा, राजाक बात छलै
रत्नसेनक परताप छलै
झाँप-तोप कएल गेल
जोतषी बजाओल गेल
लग्न - कर्म देखल गेल
टीपनि बनाओल गेल
ढोलहो दियाओल गेल
राजकुमारीक कोखि सं
मनुक्ख नहि
देवताक जन्म भेल
साक्षात भैरव - अवतार'
ओना
राजकुमारीक मन मे
ताही दिन लेने छल
चिन्ता पैसार

एहिना बीतैत गेल
दिन पर दिन
मास पर मास
बर्ख पर बर्ख
भैरव भेला पैघ
गदह पचीसी मे पएर देल

सुनलनि कतौ अपन जन्मक विरतान्त
एक दिन एना भेल
धेलनि माइक भोंट
पुछलथिन—
        के थिक हम्मर बाप
        मत्त - मत तों बाज
आर कते की
अवाच - कुवाच
राजकुमारी चुप्प
जिनगी मे पहिले बेर भेल छली मओन
भुकल छलनि माथ
मुदा ओहो त कम नहियो छली
                    बापे सं सिखल छलनि
                      मारन
                        मोहन
                          उच्चाटन
शान्तस्वरें बजली—
    बुढ़ारी मे हमरा
    इएह लिखल छल
    जे आन सं नहि
    तोरा मुंहे सूनल
    सोचैत छलहुं—
    राज - पाट तोरा सौंपि
    अपने लेब काशी वास
    आर छीहे कत्ते दिन
    जेठजन त ओहने छथि
    माउग ने मनुक्ख
            बलिगोचना…'

राजकुमारीक मंत्र केलकनि काज
भैरव भेला शान्त
राजकुमारी छली क्लान्त
तहिया सं राज - काज
देखल करथि बेसी भाग
भैरव - अवतार—छोट राजकुमार

राजकुमारी साधारण महिला नहि छली
आब त आर नहि
चोटाएल सांप छली
अवसरक प्रतीक्षा मे
भैरव छला नेना—अवखिच्चू
मरिपहुं गुनभिक्क
राजमद मे मत्त
दिन - राति
सुरा - सुन्दरी मे व्यस्त
राजकुमारी छोड़लनि अगिनवाण
अपटी खेत मे गेलनि परान
राजकुमारी
खजानाक कुंजी फेर सं सम्हारलनि

राजकुमारी कहलनि—
        हम बड़ दुखी छी
        पुत्र - शोक मे
        केहन हमर कपार
        पति परमेसर
        पिता परमगुरु
        पुत्रो मुइल अकाल
        हमरा सहारा चाही'

लोक सभ बुझलक—

राजकुमारी सरिपहुं दुखी छथि
चढ़ल जुआनी स्वामी मुइलथिन
मुइलथिन बाप माथकेर छांह
बेटा मुइलनि एहन समय मे
जखन वयस के लगलनि धाह
मुदा
राजकुमारी धन् छथि
बलिहारी कही हुनके
एहनो स्थिति मे
आंखि सं नहिञे ने खसलनि
एको बुन्न नोर.....'

दरबारी सभ सोचलक
अपना मे बिचारलक
सत्ते राजकुमारी दुखी छथि
हुनका सहारा चाहियनि
शितला - बाहन के बजाओल गेल
ओकरा
राजनीतिक पाठशाला मे
भर्ती कराओल गेल
शितला - बाहन
पहिने त दोलत्ती झाड़लनि
कान पट - पटओलनि
फेर स्थिर चित्तें सिग्वय लगला
ओना मासी धङ

देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन

राजकुमारी भुवन मोहिनी'''
आ एहीठाम अबेत - अबेत
लागि जाइ छल हमर आंखि
कहियो वा
सुति रहै छलि
अस्सी बर्खक बुढ़ि—हमर नानी
आ हमर जिज्ञासा बनले रहै छल
आखिर ओइ देशक की भेलै
जकर नाम छलै सोनचिड़ैया
मरि गेला राजा रत्नसेन
छोट राजकुमार—भैरव अवतार
मुदा राजकुमारी भुवन मोहिनी
शितला-वाहन—जेठ राजकुमार ''

ओइ दिन हम जगले रही
मुदा नानी हफियाइए
बड़ राति भेलै
आब सुति रहू'
ओ कहै—ए
मुदा हम जिद्द पकड़ि लइ छी—
राजकुमारीक की भेलै
आर की हेतै
ओ हफियाइत उदास स्वरें कहै—ए
अनका पर इंट
त अपना पर पाथर
पापक घैल भरि गेलै
फुटि गेलै

प्रेत नाइय अशौच
फांक पाबि एक दिन
राजकुमारी सजि-धजि क
बहराएले छली
अपने पोसल जिन्न
घेंट मचोड़ि देलकनि
जा लोक दौड़य - दौड़य
ता खेल खतम्
ओना
लोक त कहिते छलै जे
कएल घरेक छलै
राम जानथि
कोन सत्त कोन फूसि···

जानि ने नानी आर
की सभ कहने छलि
हमर आँखि लागि गेल रहए—ए
हम सुति रहल रही
परञ्च
पहिलुक कथा ओहिना अछि मन
आखर आखर—
देशक नाम छलै सोनचिड़ैया
राजा रत्नसेन
रानी रुपमती कमलावती
राजकुमारी भुवनमोहिनी···

●

आशंका

●

घर खसबाक आशंका नेने
सुतैत छी प्रत्येक राति
आ चेहाएल नीन्न
भोरे टुटैत
पड़ाइ छी बाट पर
मुदा गाड़ी घोड़ा पछोर धेनहि जाइ-ए ●

स्थिति

●

आ जानि ने
अकस्मात् केमहर सँ आबि
एक टुकड़ी कारी मेघ
झाँपि देलकै—चान के
अपने लोक
अनचिन्हार बनि गेलै ●

नेताक प्रति

●

आइ काल्हि हम
बड़ बिसरभोर भ गेल छी
श्रीमान्
हमरा कहाँ अछि मन
कहने रही
अपने जे काल्हिखन ●

जनता के

●

बड़ - बड़ घोड़ी
भासि गेल
नरघोड़ी पुछय थानि कते
तहिना जनतो सरकार बुझाइछ
थाहि रहल अछि जनता के ●

वर्षान्त

●

एके क्षण मे
ककरो मृत्यु आ ककरो जन्म
स्वाभाविक वा अस्वाभाविक
भनहि जे हो
थिक धरि सत्य
आ तहिना सत्य थिक जे
लोक शोक नहि
उत्सव मनावै - ए ●

उद्यम

●

मात्र डेंगओने सूप
दरिद्रा भागि सकत की
बिना उद्यमे
अन धन लक्ष्मी
आबि सकत की ●